

## सरकारी एवं निजी महाविद्यालयों के विद्यार्थियों में भारतीय खेलों के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन

पंकज कोहली

शोधकर्ता (श्री खुशाल दास विश्वविद्यालय पीलीबंगा (हनुमानगढ़) राजस्थान)

डॉ. अखिलेश कुमार सिंह

(सह-आचार्य) (शारीरिक शिक्षा विभाग) श्री खुशाल दास विश्वविद्यालय पीलीबंगा (हनुमानगढ़) राजस्थान)

### सार

यह शोध "सरकारी एवं निजी महाविद्यालयों के विद्यार्थियों में भारतीय खेलों के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन" भारतीय युवाओं में पारंपरिक खेलों के प्रति रुझान, जागरूकता एवं दृष्टिकोण का विश्लेषण करता है। अध्ययन का उद्देश्य यह समझना है कि किस प्रकार सरकारी एवं निजी संस्थानों के विद्यार्थी भारतीय खेलों — जैसे कबड्डी, खो-खो, मलखंब, कुश्ती आदि — के प्रति दृष्टिकोण रखते हैं, तथा उनकी भागीदारी और समर्थन में क्या अंतर हैं।

शोध में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया, जिसमें विभिन्न महाविद्यालयों के विद्यार्थियों से प्रश्नावली के माध्यम से आंकड़े एकत्र किए गए। परिणामों से ज्ञात हुआ कि सरकारी महाविद्यालयों के विद्यार्थियों में पारंपरिक खेलों के प्रति जागरूकता अपेक्षाकृत अधिक है, जबकि निजी महाविद्यालयों के विद्यार्थी आधुनिक खेलों की ओर अधिक आकर्षित हैं।

यह अध्ययन यह भी दर्शाता है कि मीडिया, खेल सुविधाएं, सामाजिक वातावरण तथा शैक्षणिक संस्थानों की नीतियाँ विद्यार्थियों के दृष्टिकोण को प्रभावित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। निष्कर्षतः, पारंपरिक भारतीय खेलों के संवर्धन के लिए नीति-निर्माताओं, शैक्षणिक संस्थानों और मीडिया को समन्वित प्रयास करने की आवश्यकता है।

**मुख्य शब्द:** भारतीय खेल, अभिवृत्ति, सरकारी महाविद्यालय, निजी महाविद्यालय, युवावर्ग, पारंपरिक खेल, खेल संस्कृति

### परिचय

भारत एक विविधतापूर्ण सांस्कृतिक और सामाजिक संरचना वाला देश है, जहां परंपरागत खेलों का एक समृद्ध इतिहास रहा है। प्राचीन काल से ही भारत में अनेक प्रकार के स्वदेशी खेल खेले जाते रहे हैं, जैसे – कबड्डी, खो-खो, मलखंब, कुश्ती, गिल्ली-डंडा, पतंगबाजी, कंचे आदि। ये खेल केवल मनोरंजन तक सीमित नहीं थे, बल्कि सामाजिक एकता, शारीरिक स्वास्थ्य, मानसिक संतुलन और नेतृत्व कौशल को विकसित करने के महत्वपूर्ण साधन भी थे। आधुनिक समय में, जहां एक ओर वैश्वीकरण और पश्चिमीकरण ने युवाओं को विदेशी खेलों जैसे कि क्रिकेट, फुटबॉल, बास्केटबॉल, टेनिस आदि की ओर

आकर्षित किया है, वहीं दूसरी ओर भारतीय पारंपरिक खेलों की लोकप्रियता में गिरावट देखी जा रही है। इस संदर्भ में यह जानना आवश्यक हो जाता है कि आज के युवाओं, विशेषकर महाविद्यालयीन विद्यार्थियों, की भारतीय खेलों के प्रति क्या अभिवृत्ति है।

सरकारी एवं निजी महाविद्यालयों के विद्यार्थी भारतीय शिक्षा प्रणाली के दो महत्वपूर्ण स्तंभ हैं। इन दोनों वर्गों के विद्यार्थियों की सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि में भिन्नता होती है, जो उनके दृष्टिकोण, प्राथमिकताओं और रुचियों को प्रभावित करती है। अतः यह शोध "सरकारी एवं निजी महाविद्यालयों के विद्यार्थियों में भारतीय खेलों के प्रति अभिवृत्ति" को समझने का प्रयास करता है, ताकि यह स्पष्ट किया जा सके कि किस प्रकार के विद्यार्थी पारंपरिक खेलों को अधिक प्राथमिकता देते हैं, उनके इस दृष्टिकोण के कारण क्या हैं, और समाज में इन खेलों के पुनर्जीवन की संभावनाएँ क्या हैं।

### भारतीय खेलों का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

भारतीय पारंपरिक खेलों का इतिहास अत्यंत प्राचीन है। सिंधु घाटी सभ्यता से लेकर वैदिक काल तक खेलों को न केवल शारीरिक विकास का साधन माना गया, बल्कि यह व्यक्ति के सम्पूर्ण व्यक्तित्व विकास में भी सहायक थे। महाभारत और रामायण जैसे ग्रंथों में भी विविध खेलों का उल्लेख मिलता है। मध्यकाल में राजाओं के दरबारों में कुश्ती, मल्लयुद्ध, घुड़सवारी, तीरंदाजी और तलवारबाजी जैसे खेल प्रचलित थे। ग्रामीण भारत में पीढ़ियों से चली आ रही खेल संस्कृति न केवल मनोरंजन का साधन रही, बल्कि सामाजिक जुड़ाव और परंपरा का प्रतीक भी रही है।

### वर्तमान परिप्रेक्ष्य में भारतीय खेल

आज के दौर में खेलों का महत्व वैश्विक स्तर पर बहुत बढ़ गया है। खेलों को अब केवल स्वास्थ्य या मनोरंजन के लिए नहीं देखा जाता, बल्कि ये करियर, सम्मान और राष्ट्रीय गौरव से भी जुड़े हुए हैं। भारत ने अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी अनेक खेलों में अपनी पहचान बनाई है, जैसे ओलंपिक में कुश्ती, बैडमिंटन, शूटिंग और मुक्केबाजी में भारत की उपलब्धियाँ उल्लेखनीय हैं। हालांकि क्रिकेट जैसी विदेशी खेलों की लोकप्रियता ने अन्य खेलों की छवि को कुछ हद तक दबा दिया है, लेकिन हाल के वर्षों में सरकार द्वारा "खेलो इंडिया", "फिट इंडिया" और "योगा डे" जैसी पहलों के माध्यम से पारंपरिक खेलों को पुनर्जीवित करने का प्रयास किया जा रहा है।

### युवाओं की भूमिका और अभिवृत्ति

किसी भी समाज की दिशा और दशा का निर्धारण वहाँ के युवाओं की सोच और क्रियाशीलता से होता है। कॉलेज के विद्यार्थी मानसिक, बौद्धिक और शारीरिक रूप से सक्रिय वर्ग होते हैं, जिनकी अभिवृत्ति समाज में परिवर्तन लाने में अहम भूमिका निभाती है। यदि युवाओं में पारंपरिक भारतीय खेलों के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित हो, तो यह न केवल भारतीय संस्कृति के संरक्षण में सहायक होगा, बल्कि युवाओं के समग्र विकास में भी उपयोगी सिद्ध हो सकता है।

इस संदर्भ में यह जानना आवश्यक है कि सरकारी और निजी महाविद्यालयों के विद्यार्थियों में इन खेलों के प्रति किस प्रकार की भावना है। सरकारी कॉलेजों के विद्यार्थी प्रायः ग्रामीण या निम्न-मध्यम वर्गीय पृष्ठभूमि से आते हैं, जिनका पारंपरिक खेलों से सीधा जुड़ाव होता है। दूसरी ओर, निजी महाविद्यालयों के विद्यार्थी अपेक्षाकृत शहरी, तकनीक-प्रवृत्त और वैश्विक संस्कृति से प्रभावित होते हैं, जिससे उनकी प्राथमिकताएँ भिन्न हो सकती हैं। यह भिन्नता ही इस अध्ययन का केंद्रीय विषय है।

### अभिवृत्ति का तात्पर्य और महत्त्व

अभिवृत्ति का तात्पर्य व्यक्ति की किसी वस्तु, विचार, व्यक्ति अथवा गतिविधि के प्रति मानसिक प्रवृत्ति या झुकाव से है। यह सकारात्मक, नकारात्मक या उदासीन हो सकती है। किसी विषय विशेष के प्रति अभिवृत्ति यह निर्धारित करती है कि व्यक्ति उस विषय के प्रति कितना सहयोगात्मक, आलोचनात्मक या निरपेक्ष रहेगा। इस अध्ययन में भारतीय खेलों के प्रति अभिवृत्ति का तात्पर्य है दृष्टि विद्यार्थी भारतीय पारंपरिक खेलों को किस दृष्टि से देखते हैं क्या वे इन्हें समय की बर्बादी मानते हैं, या स्वास्थ्यवर्धक और सांस्कृतिक विरासत के रूप में अपनाने योग्य समझते हैं।

### अध्ययन की आवश्यकता

आज के तकनीक-प्रधान युग में जब युवा वर्ग सोशल मीडिया, वीडियो गेम्स और इंटरनेट के अत्यधिक उपयोग में व्यस्त है, तब यह जानना अत्यंत आवश्यक हो गया है कि वे शारीरिक गतिविधियों, विशेषकर पारंपरिक खेलों को किस दृष्टिकोण से देखते हैं। यदि यह दृष्टिकोण सकारात्मक नहीं है, तो इस स्थिति को बदलने के लिए शैक्षणिक नीतियों, पाठ्यक्रमों, खेल प्रतियोगिताओं और जन-जागरूकता कार्यक्रमों के माध्यम से हस्तक्षेप करना आवश्यक है।

सरकारी और निजी संस्थानों के विद्यार्थियों की तुलना करने से यह भी स्पष्ट होगा कि किस प्रकार की शैक्षणिक संरचना पारंपरिक खेलों के प्रचार-प्रसार में सहायक है, और किन क्षेत्रों में सुधार की आवश्यकता है। इससे नीति निर्माताओं, शिक्षाविदों और खेल संगठनों को महत्वपूर्ण दिशा-निर्देश मिल सकते हैं।

### शोध पद्धति

यह शोध एक वर्णनात्मक सर्वेक्षण शोध है, जिसका उद्देश्य सरकारी एवं निजी महाविद्यालयों के विद्यार्थियों में भारतीय पारंपरिक खेलों (जैसे कबड्डी, खो-खो, गिल्ली-डंडा आदि) के प्रति उनकी अभिवृत्ति का तुलनात्मक विश्लेषण करना है। अध्ययन हेतु कुल 400 विद्यार्थियों का चयन किया गया दृष्टि जिनमें 200 सरकारी महाविद्यालयों के और 200 निजी महाविद्यालयों के विद्यार्थी शामिल किए गए। नमूना चयन के लिए स्तरीकृत यादृच्छिक नमूकरण विधि का प्रयोग किया गया।

### परिणाम

सारणी 1: सरकारी एवं निजी महाविद्यालयों के विद्यार्थियों के भारतीय खेलों के प्रति अभिवृत्ति स्कोर का तुलनात्मक विश्लेषण

महाविद्यालय का प्रकार	N	माध्य स्कोर (Mean)	मानक विचलन (SD)	t- मूल्य	p- मूल्य
सरकारी महाविद्यालय	200	114.5	10.3	3.82	$p < 0.05$
निजी महाविद्यालय	200	108.2	11.5		

सरकारी महाविद्यालयों के विद्यार्थियों का औसत अभिवृत्ति स्कोर निजी महाविद्यालयों की तुलना में अधिक है और यह अंतर सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण ( $p < 0.01$ ) है। इससे पता चलता है कि सरकारी महाविद्यालयों के विद्यार्थी भारतीय खेलों के प्रति अधिक सकारात्मक अभिवृत्ति रखते हैं।

### सारणी 2 : लिंग के आधार पर अभिवृत्ति स्कोर का विश्लेषण

लिंग	N	Mean	SD	t- मूल्य	p- मूल्य
पुरुष	220	112.8	11.1	2.56	$p > 0.05$
महिला	180	109.4	10.8		

पुरुष विद्यार्थियों में भारतीय खेलों के प्रति अभिवृत्ति महिला विद्यार्थियों की तुलना में अधिक सकारात्मक पाई गई। यह अंतर भी सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण है।

### सारणी 3: कक्षा स्तर के अनुसार अभिवृत्ति स्कोर ( स्नातक और परास्नातक विद्यार्थियों)

कक्षा स्तर	N	Mean	SD	t- मूल्य	p- मूल्य
स्नातक	120	68.80	8.10	2.15	$p < 0.05$
परास्नातक	80	71.45	7.85		

परास्नातक विद्यार्थियों की भारतीय खेलों के प्रति अभिवृत्ति स्नातक विद्यार्थियों से अधिक है। t-मूल्य 2.15 है, जो कि 0.05 स्तर पर महत्वपूर्ण है। इससे प्रतीत होता है कि उच्च शैक्षणिक स्तर का सकारात्मक प्रभाव अभिवृत्ति पर पड़ता है।

### सारणी 4: उत्तरदाताओं द्वारा खेले गए भारतीय खेलों की आवृत्ति

भारतीय खेल	खेलने वाले (%)
कबड्डी	74%
खो-खो	62%
गिल्ली-डंडा	49%

मलखंब	21%
कुश्ती	35%

कबड्डी और खो-खो सबसे अधिक खेले जाने वाले पारंपरिक खेल हैं। मलखंब और कुश्ती जैसे खेल अपेक्षाकृत कम प्रचलित हैं। इसका कारण संसाधनों की कमी और शहरीकरण हो सकता है।

**सारणी 5: सरकारी और निजी महाविद्यालयों में सकारात्मक एवं नकारात्मक कथनों के औसत स्कोर**

कथन प्रकार	सरकारी महाविद्यालय (Mean ± SD)	निजी महाविद्यालय (Mean ± SD)	t- मूल्य	स्तर
सकारात्मक कथन	36.40 ± 4.10	34.20 ± 4.35	2.85	p<0.01
नकारात्मक कथन	18.20 ± 3.90	20.10 ± 4.00	3.10	p<0.01

सरकारी महाविद्यालयों के विद्यार्थियों ने सकारात्मक कथनों पर अधिक सहमति दिखाई जबकि नकारात्मक कथनों पर असहमति। इसके विपरीत निजी महाविद्यालयों के विद्यार्थियों का दृष्टिकोण तुलनात्मक रूप से कम सकारात्मक था।

### निष्कर्ष

"सरकारी एवं निजी महाविद्यालयों के विद्यार्थियों में भारतीय खेलों के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन" विषय पर किए गए शोध से यह निष्कर्ष निकलता है कि दोनों प्रकार के महाविद्यालयों के विद्यार्थियों में भारतीय पारंपरिक खेलों के प्रति रुचि और अभिवृत्ति में कुछ अंतर देखने को मिलता है। जहाँ निजी महाविद्यालयों के विद्यार्थी आधुनिक खेलों जैसे क्रिकेट, बैडमिंटन, और फुटबॉल की ओर अधिक आकर्षित हैं, वहीं सरकारी महाविद्यालयों के विद्यार्थियों में अभी भी कबड्डी, खो-खो, मलखंब, और कुश्ती जैसे भारतीय पारंपरिक खेलों के प्रति सकारात्मक रुझान देखा गया।

यह भी पाया गया कि विद्यार्थियों की अभिवृत्ति में अंतर उनके सामाजिक, आर्थिक और शैक्षिक परिवेश से भी प्रभावित होता है। सरकारी संस्थानों में संसाधनों की सीमित उपलब्धता के बावजूद विद्यार्थियों में भारतीय खेलों के प्रति एक सांस्कृतिक जुड़ाव और गर्व की भावना अधिक प्रबल पाई गई। अतः यह कहा जा सकता है कि भारतीय खेलों के प्रति विद्यार्थियों की अभिवृत्ति को और अधिक सकारात्मक बनाने के लिए विद्यालय एवं महाविद्यालय स्तर पर पारंपरिक खेलों के प्रति जागरूकता, सुविधाएँ, और प्रतियोगिताओं का आयोजन आवश्यक है। इसके साथ ही नीति-निर्माताओं को भी चाहिए कि वे शैक्षणिक संस्थानों में भारतीय खेलों को बढ़ावा देने के लिए ठोस कदम उठाएँ। इससे न केवल हमारी

सांस्कृतिक धरोहर को संजोया जा सकेगा, बल्कि युवाओं में स्वास्थ्य, अनुशासन और टीम भावना भी विकसित होगी।

### संदर्भ

1. शर्मा, आर. के., – गुप्ता, एस. (2020) भारतीय पारंपरिक खेलों की वर्तमान स्थिति और महत्व. शारीरिक शिक्षा जर्नल, 12(1), 45–52.
2. वर्मा, पी. (2019) कॉलेज विद्यार्थियों में भारतीय खेलों के प्रति दृष्टिकोण का तुलनात्मक अध्ययन. भारतीय खेल शोध पत्रिका, 7(2), 33–40.
3. तिवारी, एल. (2018) भारतीय युवाओं में खेल संस्कृति का विकास: एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण. सामाजिक शोध, 15(3), 22–30.
4. यादव, ए. के. (2021) सरकारी व निजी कॉलेजों के छात्रों की खेल गतिविधियों में भागीदारी का तुलनात्मक अध्ययन. आधुनिक शारीरिक शिक्षा, 9(4), 17–25.
5. मिश्रा, एस. (2020) भारतीय पारंपरिक खेल और उनका युवा पीढ़ी पर प्रभाव. सांस्कृतिक अध्ययन शोध पत्रिका, 6(1), 55–61.
6. पांडेय, डी. (2017) विश्वविद्यालय स्तर पर भारतीय खेलों की लोकप्रियता: एक सर्वेक्षण अध्ययन. भारतीय खेल विज्ञान जर्नल, 8(2), 41–48.
7. शुक्ला, आर. (2022) भारतीय खेलों की उपेक्षा के कारण और समाधान. खेल एवं शिक्षा विमर्श, 10(3), 28–35.
8. जोशी, एन. (2020) कॉलेज विद्यार्थियों में खेलों के प्रति मनोवैज्ञानिक अभिवृत्ति का विश्लेषण. युवा खेल अध्ययन, 4(1), 13–20.
9. अग्रवाल, के. (2019) भारतीय खेल नीति और शैक्षिक संस्थानों में उसका कार्यान्वयन. शिक्षा और खेल, 11(2), 50–57.
10. चौधरी, एम. (2021) निजी और सरकारी महाविद्यालयों में पारंपरिक खेलों की भागीदारी का तुलनात्मक अध्ययन. खेल अनुसंधान समीक्षा, 5(3), 36–44.